''अमर भव का वरदान दे सर्व प्राप्तियाँ कराने वाला – अमृतवेला''

अमृतवेले का महत्व एवं फायदे

1. अमृतवेले चारों ओर के तमोगुणी वातावरण या वायब्रेशन्स के वायुमण्डल में प्राय: लोप स्थिति का समय होता है अर्थात् तमोगुण का प्रभाव दबा हुआ होता है। ऐसे समय पर पुकार सुनना भी सहज है तो उपकार करना भी सहज है। वरदान लेना भी सहज है और दान देना भी सहज है। क्योंकि वातावरण वृत्ति को बदलने वाला होता है। ऐसे समय पर आप वरदानी आत्माओं की स्थिति भी बाप के विशेष वरदानों की छत्रछाया के कारण बाप समान सम्पन्न और दातापन की होती है। अमृतवेले ब्रह्मलोक के निवासी बाप विशेष रूप से ज्ञान सूर्य की लाइट और माइट की किरणें विशेष बच्चों को वरदान रूप में देते हैं। इसलिए इस समय को 'ब्रह्म-मूर्त' का समय भी कहा जाता है।

2. अमृतवेले बापदादा हर बच्चे की सम्भाल करने के लिए, देखने के लिए विश्व भ्रमण करते हैं। उस समय आप पॉवरफुल स्टेज में बैठो तो सदा समीप का अनुभव करेंगे। उस समय बुद्धि की लाइन क्लीयर होगी तो नये-नये प्लैन टच होंगे। प्रेरणाओं को कैच कर सकेंगे।

3. अमृतवेला – सहज प्राप्तियों की वेला है। अमृतवेले वरदान के रूप में जो प्राप्ति करने चाहो वह कर सकते हो। क्योंकि वरदाता और भाग्यविधाता बाप उस समय भोले भगवान् के रूप में होते हैं। इसलिएं जो तकदीर की रेखा खिंचवाने चाहो वह खिंचवा सकते हो। अमृतवेले हरेक के लिए खुले भंडार हैं जितनी ऊंच प्रालब्ध की झोली भरने चाहो भर सकते हो। बापदादा की खुली ऑफर है – जितने जन्मों के लिए चाहे श्रेष्ठ लकीर खिंचवा सकते हो। अष्ट रत्नों में आना हो या 108 की माला में आना हो.... उस समय लवफुल बाप से लव के आधार पर श्रेष्ठ भाग्य बना सकते हो।

4. अमृतवेले को ब्रह्म-मुहूर्त और ब्रह्मा-मुहूर्त भी कहते हैं। क्योंकि सभी ब्रह्मा के समान नये दिन का आरम्भ करते हो। ब्रह्म-मुहूर्त के समय का

Scanned by CamScanner

वायुमण्डल ऐसा होता है – कि आत्मा सहज ही स्वयं को ब्रह्मलोक की वासी अनुभव कर सकती है। दूसरे समय में पुरुषार्थ करके आवाज़ से वायुमण्डल से स्वयं को डिटैच करना पड़ता, मेहनत करनी पड़ती लेकिन अमृतवेले इस मेहनत की आवश्यकता महसूस नहीं होती है। जैसे ब्रह्मधाम, शान्तिधाम है वैसे अमृतवेले के समय में भी स्वत: ही शान्ति और एकान्त रहती है। साइलेन्स के कारण शक्ति स्वरूप की स्टेज और शान्तिधाम वासी बनने की स्टेज सहज ही धारण कर सकते हो।

5. अमृतवेले रोज़ बापदादा स्नेह और शक्ति की विशेष पालना से सभी रूहानी गुलाब के पुष्पों से मिलन मनाते हैं। अमृतवेला विशेष प्रभु पालना की वेला है। इसलिए अमृतवेला विशेष परमात्म-मिलन की वेला है। रूहानी-रूह-रूहान करने की वेला है। अमृतवेले भोले भण्डारी के वरदानों के खजाने से सहज वरदान प्राप्त होने की वेला है। ऐसे सुहावने समय को जानकर अनुभवी बनो और श्रेष्ठ सुख लो।

6. अमृतवेले का टाइम बापदादा ने विशेष ब्राह्मण बच्चों के लिए रखा है। क्योंकि विशेष बापदादा हर बच्चे की विशेषता को, सेवा को, सदा सामने लाते हैं। जो हर बच्चे की विशेषता है, गुण हैं, सेवा है – उसको विशेष वरदान से अविनाशी बनाते हैं। इसलिए खास यह समय बच्चों के लिए रखा है। अमृतवेले बापदादा हर बच्चे को स्नेह की, सहयोग की, वरदानों की पालना देते हैं। यह विशेष पालना का समय है। जैसे माँ-बाप बच्चों को सवेरे तैयार करते हैं, साफ-सुथरा करके फिर कहते – अब सारा दिन खाओ-पियो, पढ़ो। बापदादा भी अमृतवेले यह पालना देते हैं अर्थात् सारे दिन के लिए शक्ति भर देते हैं। तो यह एक्स्ट्रा वरदान वा पालना का समय है। अमृतवेले वरदानों की झोली खुली रहती है। जितना जो सच्ची दिल से वरदान लेना चाहे ले सकता है। जितना अमृतवेले को शक्तिशाली बनायेंगे उतना सदा ही वरदानों से पलते रहेंगे, चलते रहेंगे, उड़ते रहेंगे। सारा दिन सहज हो जायेगा।

7. अमृतवेला आदिकाल है, सतोप्रधान समय है उस समय शक्तिशाली बाप के स्नेह सहित जो शुभ संकल्प करेंगे उसका प्रभाव सारे दिन पर पड़ेगा। अमृतवेले के पहले संकल्प का आधार सारे दिन की दिनचर्या पर होता है।

Scanned by CamScanner

जैसे गायन है ब्रह्मा ने संकल्प से सृष्टि रची, संकल्प का इतना महत्व दिखाया हुआ है। ब्रह्मा आदिकाल में रचना रचते हैं वैसे तुम ब्राह्मण आदिकाल अर्थात् अमृतवेले जैसा सकंल्प रचेंगे वैसी ही सारे दिन की दिनचर्या रूपी सृष्टि आटोमेटिकली होती रहेगी।

8. अमृतवेले का समय विशेष बच्चों के प्रति सर्वशक्तियों के वरदान का, सर्व अनुभवों के वरदान का, बाप समान शक्तिशाली लाइट-हाउस स्वरूप में स्थित होने का, मेहनत कम और प्राप्ति अधिक होने का गोल्डन समय है। उस समय मास्टर बीजरूप, वरदानी स्वरूप की स्थिति में रहो। बाप समान स्थिति का अनुभव करो। वरदानी, विश्वकल्याणकारी स्वरूप के बजाए स्वयं के प्रति वरदान मांगने वाले नहीं बनो। अपनी वा दूसरों की शिकायतें मत करो। जैसा समय है वैसा स्मृति स्वरूप धारण करो– तब सफ़लता मूर्त बनेंगे।

9. अमृतवेला है दिन का आदि। सारे दिन के आदि के समय पॉवरफुल स्टेज बनाओ तो सारा दिन उसकी मदद मिलेगी। सारे दिन की जीवन महान बन जायेगी। अमृतवेले विशेष बाप से शक्ति भर लो तो शक्ति-स्वरूप होकर चलने से मुश्किल नहीं होगा। चाहे जैसा कार्य आये, मुश्किल का अनुभव नहीं होगा। लेकिन प्राप्त शक्ति के आधार से सहज हो जायेगा। इससे सहजयोगी, निरंतर योगी की स्टेज स्वत: बनी रहेगी। अमृतवेले को मिस करना अर्थात् संगम की विशेष प्राप्ति को खत्म कर देना।

10. अमृतवेले बापदादा विशेष स्नेही आत्माओं को स्नेह का रिटर्न देते हैं। अमृतवेले सहज वरदान मिलता है। वैसे तो सारा दिन ही अधिकार है फिर भी यह खास समय है। जैसे विशेष टाइम होता है ना कि इस टाइम पर यह चीज सस्ती मिलेगी, सीजन होती है ना – अमृतवेला विशेष सीजन है – इसलिए सहज प्राप्ति होती है। ब्राह्मणों के लिए स्पेशल अमृतवेले का समय विशेष टाइम जरूर रखेंगे। तो अमृतवेला विशेष बच्चों के प्रति है। फिर है विश्व की आत्माओं के प्रति। पहला चांस बच्चों का है। तो अच्छी तरह इस चांस का लाभ लो। इसमें अलबेले मत बनो।

11. अमृतवेले विशेष ब्रह्मा माँ "आओ बच्चे, आओ बच्चे" कह

Scanned by CamScanner

विशेष शक्तियों की खुराक बच्चों को खिलाते हैं। जैसे यहाँ घी पिलाते थे और साथ-साथ एक्सरसाइज भी कराते थे तो वतन में भी घी पिलाते अर्थात् सूक्ष्म शक्तियों की चीजें देते और अभ्यास की एक्सरसाइज भी कराते हैं। बुद्धि बल द्वारा सैर भी कराते हैं। अभी-अभी परमधाम, अभी-अभी सूक्ष्मवतन, अभी-अभी साकारी ब्राह्मण जीवन। तीनों लोकों में दौड़ की रेस कराते हैं। जिससे विशेष खातिरी जीवन में समा जाए।

12. अमृतवेले बापदादा वतन में हर बच्चे को फरिश्ते आकारी रूप में आह्वान कर सम्मुख बुलाते हैं और आकारी रूप में अपने संकल्प द्वारा सूक्ष्म सर्व शक्तियों का विशेष बल भरने की खातिरी करते हैं।

13. अमृतवेले ब्रह्मा बाबा एक-एक बच्चे की कमजोरी को जानते हुए उसकी कमजोरी को भरने में लगे रहते हैं। और जो महारथी बच्चे हैं उन्हें बेहद की सीट पर सेट करते हैं। उनमें यह बल भरते कि विश्व-सेवा के उमंग-उत्साह में सदा रहें।

14. अमृतवेले बापदादा बच्चों की माला सिमरण करने शुरू करते हैं। हर रत्न की वा मणके की विशेषता देखते हैं। उस समय आप स्वयं को भी सहज ही चेक कर सकते हो। याद की शक्ति से, संबंध की शक्ति से स्पष्ट रूहानी टी.वी में स्वयं को देख सकते हो कि बापदादा किस नम्बर में मुझे सिमरण कर रहे हैं। उसके लिए विशेष बुद्धि की लाइन बहुत क्लीयर चाहिए।

15. अमृतवेले विशेष बापदादा उमंग-उत्साह में रहने वाले हिम्मतवान बच्चों को याद करते हैं और विशेष शक्ति देते हैं। उस समय अपने को शक्ति लेने के पात्र समझकर बैठो तो बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव कर सकते हो।

16. भाग्यविधाता बाप आज्ञाकारी बच्चों को रोज़ अमृतवेले सफ़लता का तिलक लगाते हैं। बाप रोज चक्र लगाते हैं। अगर बच्चे सोये हुए हैं, तो वह उनकी गफ़लत है। जैसे दीपावली में जगह-जगह ज्योति जगाकर रखते हैं। सफ़ाई भी करते हैं, आह्वान भी करते हैं। वह लक्ष्मी का आह्वान करते और यह लक्ष्मी के रचयिता का आह्वान है। तो ज्योति जगाकर स्वच्छता से बैठो तो बाप आयेंगे। जितना बच्चे याद करते हैं बाप उसकी याद का पदमगुणा रिटर्न देते

Scanned by CamScanner

हैं। रोज अमृतवेले रिटर्न देने के लिए ही चक्र लगाते हैं। कोई कैच करते हैं कोई नहीं करते हैं। वह है अपने पुरुषार्थ पर। उस समय कैच करो तो बहुत कुछ अनुभव कर सकते हो। सारे दिन के लिए एक खुराक मिल जायेगी।

17. अमृतवेले बापदादा हरेक बच्चे से जी भर कर बातें करने के लिए, फरियाद सुनने के लिए, कमजोरी मिटाने के लिए, अनेक प्रकार के पाप बख्शाने के लिए, लाड़-प्यार देने के लिए, सब बातों के लिए फ्री है। वह समय ऑफीशियल नहीं है। उस समय जो भी करना चाहो, बाप को मनाना चाहो, रिझाना चाहो, सम्बन्ध निभाना चाहो, सर्व विधियाँ और सिद्धियाँ सहज प्राप्त कर सकते हो। प्राप्ति के भण्डार और देने वाला दाता सहज ही प्राप्त हो सकता है। सर्वगुणों की खानें, सर्वशक्तियों की खानें बच्चों के लिए खुली हैं।

18. अमृतवेले के एक सेकेण्ड का अनुभव सारे दिन और रात में सर्व प्राप्ति के स्वरूप के अनुभव का आधार है। इसलिए इस गोल्डन चांस को अलबेलेपन वा आलस्य में आकर गंवाना नहीं है।

19. वरदाता और भाग्यविधाता दोनों बाप इस समय बच्चों के लिए हाजिर-नाजिर हैं। जितना भाग्यविधाता से भाग्य लेने चाहो उतना ले सकते हो। ड्रामा अनुसार इस समय को ही विशेष वरदान है। भाग्य के भण्डारे भरपूर खुले हुए हैं। तन का, मन का, धन का, राज्य का, प्रकृति दासी बनाने का, प्रजा बनाने का, भक्त बनाने का – सब भाग्य के भण्डारे खुले हैं। सबको एक जैसा चांस है। यह भाग्य लेने के लिए क्यू में भी खड़ा नही होना है। जो चाहो वह भाग्य ले सकते हो, अधिकारी हो। कोई ताला व क्यू नहीं है।

20. सहज पुरुषार्थ के लिए सभी से अच्छी वेला है – अमृतवेला। अमृतवेला के समय आत्मा को अमृत से भरपूर कर देने से सारा दिन कर्म भी श्रेष्ठ ही होंगे। अमृतवेले अपने आपसे और बाप से रूह-रूहान करो तो बाप के समान बनने के लिए लाइट, माइट और डिवाइन इनसाइट प्राप्त होगी। जैसा उस समय का नाम है वैसा ही उसय वेले को वरदान मिला हुआ है। आज तक भी लोग कोई श्रेष्ठ कर्म करते हैं तो वेले को देखते हैं, यह कल्प-कल्प का रिवाज चला आ रहा है। तो अमृतवेला सारे दिन के समय का फाउण्डेशन वेला है, फाउण्डेशन कमजोर वा साधारण् डालेंगे तो ऊपर की

Scanned by CamScanner

बनावट भी स्वत: वैसी होगी। इस कारण जैसे फाउण्डेशन पर सदा ध्यान दिया जाता है, ऐसे सारे दिन का आधार रूप अमृतवेला फाउण्डेशन है – उसका महत्व समझकर चलो तो कर्म भी महत्वपूर्ण होंगे।

अमृतवेले याद में बैठने की विधि और फायदे

1. अमृतवेले जब याद में बैठते हो तो विशेष दो मूर्तियाँ चाहिए – एक धारणा-मूर्त्त, दूसरा अनुभूति मूर्त्त। क्योंकि उस समय बापदादा विशेष बच्चों के प्रति दाता स्वरूप और मिलन मनाने के लिए सर्व सम्बन्धों के स्नेह सम्पन्न, सर्व खजानों से झोली भरने वाले भोले भण्डारी के रूप में होते हैं। अमृतवेले ग्रहण करने अर्थात् धारण करने की शक्ति से विशेष हर रोज शुद्ध संकल्प रूपी प्रेरणा को कैच कर सकते हो। अमृतवेले धारण करने की शक्ति द्वारा धारणा मूर्त बन सकते हो।

2. अमृतवेले याद में बैठने का लक्ष्य हो – कि बापदादा से वैराइटी पिकनिक करने जा रहे हैं। जैसे पिकनिक में नमकीन भी चाहिए, मीठा भी चाहिए और वैराइटी प्रकार का चाहिए। ऐसे यही समझकर बैठो कि आज बापदादा से वैराइटी पिकनिक करनी है। पिकनिक का नाम सुनते ही फुर्त हो जायेंगे सुस्ती भाग जायेगी। जैसे पिकनिक करने के लिए बाहर जाना अच्छा लगता है ऐसे बाहर चले जाओ, कभी परमधाम में चले जाओ, कभी स्वर्ग में चले जाओ, कभी मधुबन में चले जाओ, कभी लण्डन वा आस्ट्रेलिया सेन्टर पर पहुँच जाओ – वैराइटी अनुभव करो तो रमणिकता में आ जायेंगे। रोज नवीनता का अनुभव करो। कभी शान्त स्वरूप की अनुभूति करो, कभी प्रेम स्वरूप, कभी आनंद स्वरूप... सबकी पाइंट्स बुद्धि में रखते हुए रोज नया-नया अनुभव करो तो अमृतवेले बैठने में बड़ी रूचि आयेगी। नहीं तो सुस्ती की लहर आती है। जहाँ नई चीज़ मिलती है वहाँ सुस्ती नहीं होती है। अगर वही बातें रोज-रोज हैं तो सुस्ती आने लगती है। इसलिए रोज कोई न कोई विशेष प्राप्ति का अनुभव करो तो आलस्य भाग जायेगा।

3. अमृतवेले याद की पॉवरफुल स्टेज का अनुभव करने के लिए नॉलेजफुल होकर बैठो। अमृतेवेले की याद को पॉवरफुल बनाने के लिए सारे

Scanned by CamScanner

दिन के लिए जो श्रीमत मिली हुई है उसी प्रमाण चलते रहो। सारा दिन मनन करते रहो। ज्ञान रत्नों से खेलते रहो तो वही खुशी वा ज्ञान की बातें अमृतवेले याद आने से नींद चली जायेगी और खुशी में ऐसे ही अनुभव होगा जैसे अभी प्राप्ति की खान खुल गई। तो जहाँ प्राप्ति होती है वहाँ नींद नहीं आती है। अगर सारा दिन मनन कम है और उस समय मनन करने की कोशिश करेंगे तो मनन नहीं हो सकेगा। क्योंकि बुद्धि फ्रेश नहीं होगी तो न मनन होगा न अनुभव होगा। फिर सुस्ती आयेगी।

4. अमृतवेले की याद को पॉवरफुल बनाने के लिए पहले अपने स्वरूप को पॉवरफुल बनाओ। चाहे बिंदु रूप होकर बैठो, चाहे फरिश्ता स्वरूप में बैठो। जिस स्वरूप में बाप को देखते हो वही स्वरूप पहले स्व का बनाओ। अपना रूप चेंज कर लो तो बहुत पॉवरफुल स्टेज का अनुभव होगा।

5. अमृतवेले केयरफुल बन स्मृति के स्विच को यथार्थ रीति से सेट करो। बापदादा द्वारा हर बच्चे को दिव्य बुद्धि रूपी लाइट की गिफ्ट मिली हुई है। यह बहुत पॉवरफुल और सहज लिफ्ट की गिफ्ट है। सेकेण्ड में इस लिफ्ट द्वारा जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। यह वन्डरफुल लिफ्ट तीनों लोकों तक जाने वाली है। इस लिफ्ट द्वारा जितना समय जिस लोक का अनुभव करना चाहो उतना समय वहाँ स्थित रह सकते हो। सिर्फ स्मृति का स्विच ऑन करो और एक सेकेण्ड में पहुंचो। दिव्य बुद्धि की गिफ्ट अलौकिक विमान है। जिस दिव्य विमान द्वारा सेकेण्ड के स्विच ऑन करने से जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। सेकेण्ड में विश्व-कल्याणकारी बन सारे विश्व को लाइट माइट दे सकते हो। विशेष अमृतेवेले दिव्य बुद्धि रूपी विमान द्वारा ऊंची चोटी की स्थिति में स्थित होकर विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति लाइट और माइट की शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के सहयोग की लहर फैलाओ।

6. अमृतवेले जब याद की यात्रा में बैठते हो या रूह-रूहान करते हो तो बालक सो मालिक होकर बैठो। रूह-रूहान करते समय बालक और जब याद की यात्रा का अनुभव रूप में होते तो मालिकपन का अनुभव हो। अमृतवेले उठते ही बच्चे रूप में बाप के साथ मिलन मनाओ। अपना स्वरूप याद रहे कि मैं बच्चा हूँ – इससे गृहस्थी-पन का बोझ समाप्त हो जायेगा और आत्मा

Scanned by CamScanner

बाप से मिलन मनाते, मिलन से सर्व प्राप्तियाँ का अनुभव करेगी, फिर बुद्धि यहाँ वहाँ जा नहीं सकती।

7. अमृतवेले अपने श्रेष्ठ भाग्य को याद करके अपार खुशी का अनुभव करो। रोज दिलखुश मिठाई खाओ। तो फिर दिल शिकस्त करने वाली बातें आपके पास नहीं आयेंगी और दु:ख की घटायें समाप्त हो जायेंगी।

8. अमृतवेले रोज अपने तकदीर की तस्वीर दर्पण में देखो और चेक करो कि हमारी तस्वीर में कहाँ तक रूहानियत बढ़ती जा रही है। जैसे वे लोग लौकिक दृष्टि से रूप में व शक्ल में अपनी लाली को देखते हैं कि कहाँ तक लाल हुए हैं ऐसे आप सब अलौकिक तस्वीर देखते हुए रूहानियत रूपी लाली को देखते रहो।

9. अमृतवेले सर्व सम्बन्धों से बाप से मिलन मनाओ। अमृतवेले से खुशी के खजाने को यूज करो। ऑख खुलते ही पहले संकल्प में विश्व के रचयिता, सर्व खजानों के दाता, सर्व वरदानों के दाता बीज से मिलन होता है। जिसमें सारा वृक्ष समाया हुआ है। जिस बाप की झलक देखने की इच्छा से कितने कठिन मार्ग अपनाते हैं उस बाप से सर्व सम्बन्धों से मिलन मनाने के अनुभवों के श्रेष्ठ खजाने के हम अधिकारी हैं – ऐसे खुशी के खजाने को यूज करो, सोचो व अपने आपसे बातें करो तो याद शक्तिशाली हो जायेगी।

10. अमृतवेले यह रिवाइज करो – कि मैं कौन हूँ! जो हूँ जैसा हूँ वैसा ही अपने को जानने से सदा स्वमान में रहेंगे और देह अभिमान से स्वत: परे रहेंगे। "मैं कौन हूँ?" इस एक शब्द के उत्तर में सारा ही ज्ञान समाया हुआ है। यह एक शब्द ही खुशी के खजाने, सर्व शक्तियों के खजाने, ज्ञान धन के खजाने, श्वाँस और समय के खजाने की चाबी है।

11. अमृतवेले ऑख खुलते ही स्वयं को बच्चा समझ बाप से गुडमार्निंग करो। तो बाप भी रेसपान्ड करेंगे – "बालक सो मालिक बच्चे, बाप के सिरताज बच्चे।" बाप के सिवाए और कोई दिखाई न दे। तो पहली मुलाकात बाप से हो और पहले मिलन में ही बाप से "समान भव" का वरदान ले लो। इसी वरदान में सब वरदान समाये हुए हैं। पहला ही संकल्प समर्थ होगा तो सारा दिन समर्थ रहेगा। व्यर्थ समाप्त हो जायेगा।

Scanned by CamScanner

12. अमृतवेले रोज की दिनचर्या तन और मन की सेट करो। जैसे तन की दिनचर्या बनाते हो कि सारे दिन में यह-यह कर्म करना है। ऐसे अपने स्थूल कार्य के हिसाब से मन की स्थिति को सेट करो। जैसे अमृतवेले याद की यात्रा का समय सेट है तो ऐसे सुहावने समय पर जबकि समय का भी सहयोग है, बुद्धि की सतोप्रधान स्टेज का भी सहयोग है तो ऐसे समय पर मन की स्थिति भी सबसे पॉवरफुल स्टेज की चाहिए। पॉवरफुल स्टेज अर्थात् बाप समान बीज-रूप स्थिति। तो अमृतवेले का जैसा श्रेष्ठ समय है वैसी श्रेष्ठ स्थिति हो। साधारण स्थिति में तो कर्म करते भी रह सकते हो लेकिन यह विशेष वरदान का समय है इसलिए अमृतवेले पॉवरफुल स्थिति की सेटिंग करो।

13. अमृतवेले-अपने सम्पर्क में आने वाली आत्माओं पर संकल्प द्वारा नजर दौड़ाओं। जितना आप उन्हें संकल्प से याद करेंगे उतना वह संकल्प उनके पास पहुँचेगा और वह कहेंगे कि हमने भी बहुत बारी आपको याद किया था। संकल्पों द्वारा सेवा करना भी सेवा का श्रेष्ठ और नया तरीका है।

14. अमृतवेले स्वयं को मास्टर सर्वशक्तिवान का तिलक दो। सारा दिन तिलकधारी होकर रहो तो कभी भी माया सामना नहीं करेगी। तिलक आपके विजय की निशानी है।

15. रोज़ अमृतवेले अपनी महिमा, बाप की महिमा, अपना कर्त्तव्य, बाप का कर्त्तव्य रिवाईज करो। एक निजी नियम बनाओ। अलबेलापन तब आता है — जब सिर्फ डायरेक्शन समझकर करते हो। नियम नहीं बनाते। जैसे दफ्तर में जाना जीवन का नियम है, ऐसे अपने आपको नियम दो। अमृतवेले उठकर अपने नियम को दोहराओ। मेरे जीवन की क्या विशेषताएं हैं, ब्राह्मण जीवन के क्या नियम हैं। ऐसे अमृतवेले से लेकर स्वचिन्तन शुरू करो और बार-बार स्वचिन्तन के साथ-साथ स्व की चेकिंग करो। स्व की चेकिंग को आवश्यक कार्य समझ "री-रिफ्रेश" करो तो सारा दिन उसका बल मिलेगा। अगर फिर अलबेलपन आया तो अपने आपको सजा दो। "दृढ़ संकल्प" रख अपने जीवन का नियम बनाओ तो अलबेलपन समाप्त हो जायेगा।

16. रोज़ अमृतवेले विश्व वरदानी स्वरूप से विश्व-कल्याणकारी बाप के

Scanned by CamScanner

साथ कम्बाइन्ड रूप बन विश्व वरदानी शक्ति और विश्व-कल्याणकारी शिव ऐसे शिव-शक्ति कम्बाइन्ड रूप से मन्सा संकल्प व वृत्ति द्वारा वायब्रेशन की खुशबू फैलाओ। जैसे आजकल स्थूल खुशबू के साधनों से भिन्न-भिन्न प्रकार की खुशबू फैलाते हैं कोई गुलाब की खुशबू, कोई चंदन की खुशबू – ऐसे आप रोज अमृतवेले भिन्न-भिन्न श्रेष्ठ वायब्रेशन के फाउन्टेन माफिक आत्माओं के ऊपर गुलाबवाशी करो। सिर्फ संकल्प का आटोमैटिक स्विच ऑन करो तो वायब्रेशन फैलने लगेंगे। अमृतवेला ऐसा पॉवरफुल बनाओ जो विश्व को लाइट और माइट का वरदान प्राप्त हो।

17. जैसे सबेरे-सबेरे उठकर शरीर का श्रृंगार करते हो, ऐसे पहले बाप द्वारा मिली हुई सर्व शक्तियों से आत्मा का श्रृंगार करो। जो श्रृंगार किये हुए होंगे वह संघारी मूर्त होंगे। सारे विश्व में सर्वश्रेष्ठ आत्मायें हो तो श्रेष्ठ आत्माओं का श्रृंगार भी श्रेष्ठ होगा। तो रोज़ अमृतवेले साक्षी बन अपनी आत्मा का श्रेष्ठ श्रृंगार करो। करने वाले भी आप हो, करना भी अपने आप ही है।

18. अमृतवेले अव्यक्त बापदादा से अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर रूह-रूहान करो तो अनुभव करेंगे कि सचमुच बाप के साथ बातचीत कर रहे हैं और इसी रूह-रूहान में जैसे सन्देशियों को कई दृश्य दिखाते हैं वैसे ही बहुत गुह्य गोपनीय रहस्य बुद्धियोग से अनुभव करेंगे। लेकिन यह अनुभव करने के लिए एक बात आवश्यक है – अमृतवेले की अव्यक्त स्थिति में वही स्थित हो सकेंगे जो सारा दिन अव्यक्त स्थिति में और अन्तर्मुख स्थिति में रहेंगे। अगर बाप से स्नेह है और मिलने की आशा है तो यह बहुत सहज तरीका अपनाओ।

19. अमृतवेले बाप से मिलन मनाकर बाप समान मास्टर बीजरूप बन, मास्टर विश्व कल्याणकारी बन सर्व आत्माओं को अपनी प्राप्त हुई शक्तियों के द्वारा आत्माओं की वृत्ति और वायुमण्डल परिवर्तन करने के लिए सहयोगी बनो। बीज द्वारा सारे वृक्ष को रूहानी जल देने के सहयोगी बनो, जिससे सर्व आत्माओं रूपी पत्तों को पानी मिलने का अनुभव हो।

20. रोज़ अमृतवेले विशेष उमंग-उत्साह का नया संकल्प करो और फिर

Scanned by CamScanner

चेक करो तो अपनी भी सदा के लिए उत्साह वाली जीवन होगी और उत्साह दिलाने वाले भी बन जायेंगे। सदैव अपने संकल्पों में हर रोज़ कोई न कोई के प्रति उमंग-उत्साह का संकल्प रखो। जैसे आजकल अखबारों में ''आज के विचार'' लिखते हैं ना। ऐसे रोज़ मन का संकल्प कोई न कोई उमंग-उत्साह का इमर्ज रूप में लाओ। तो सदा ही नया उमंग-उत्साह रहेगा।

21. अमृतवेले अपने मन, वाणी और कर्म के प्लैन को फिक्स करो। अमृतवेले को ठीक करने से सब ठीक हो जायेगा। जैसे-अमृत पीने से अमर बन जाते हैं तो अमृतवेले को सफल करने से 'अमर भव' का वरदान मिल जाता है। फिर सारा दिन कोई भी विघ्नों में मुरझायेंगे नहीं। सदा हर्षित रहने में और सदा शक्तिशाली बनने में अमर रहेंगे। अमृतवेले जो 'अमर भव' का वरदान मिलता है वह अगर नहीं लेंगे तो फिर मेहनत करनी पड़ेगी। 'अमर भव' के वरदान से मेहनत और खर्चा दोनों से छूट जायेंगे।

22. रोज़ अमृतवेले अपने एक टाइटल को स्मृति में लाओ और उस पर मनन करो तो मनन शक्ति से बुद्धि सदा शक्तिशाली रहेगी। शक्तिशाली बुद्धि के ऊपर माया का वार नहीं हो सकता अर्थात् परवश नहीं हो सकते।

23. रोज़ अमृतवेले त्रिमूर्ति स्मृति के अविनाशी तिलक को चेक करो – (अ) स्वयं की स्मृति, (ब)बाप की स्मृति, (स) ड्रामा के नॉलेज की स्मृति।

24. रोज़ अमृतवेले मन का भाव मिक्स करके नहीं बैठो लेकिन प्लेन बुद्धि होकर बैठो फिर टचिंग यथार्थ होगी। अगर कोई प्राब्लम आती है और अपने मन के भाव लेकर बैठते हो तो मेरे विचार से यह ठीक हो सकता है तो टचिंग भी वैसी होती, यथार्थ नहीं होती। मन के संकल्प का रेसपान्ड मिलता है। इसलिए कहाँ न कहाँ सफ़लता नहीं होती। फिर मूंझते हैं कि अमृतवेले डायरेक्शन तो यही मिला था फिर पता नहीं ऐसे क्यों हुआ, सफ़लता क्यों नहीं मिली। लेकिन मन का भाव जो मिक्स किया उस भाव का ही फल मिल जाता है। इसलिए मन के संकल्प को भी विल कर दो। मेरा संकल्प यह कहता है, नहीं, ''बाबा क्या कहता है।''

25. रात के समय – जब दिन समाप्त करते हो तो याद की अग्नि से वा स्मृति की शक्ति से पुराने खाते को समाप्त कर दो। सारे दिन के किये हुए

Scanned by CamScanner

कर्मों का खाता और संकल्पों का खाता जो कुछ भी हुआ उसको चुक्तू कर दो। दूसरे दिन के लिए कुछ भी कर्ज की रीति से न रखो। नहीं तो वह मर्ज के रूप में बुद्धि को कमज़ोर कर देता है। इसलिए रोज रात को अपना रजिस्टर साफ करो। जो हुआ उसे योग की अग्नि में भस्म करो। नॉलेज की शक्ति व याद की शक्ति से, विल पावर और कन्ट्रोलिंग पावर से अपना रजिस्टर साफ रखो। एक दिन के किये हुए व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ कर्म की दूसरे दिन लिंक न रहे। अर्थात् कर्जा न रहे। बीती सो बीती, फुलस्टाप लगाकर सो जाओ तो अमृतवेले मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

26. रोज अमृतवेले ऐसे ही सोचो कि निंद्रा से नहीं, शान्तिधाम से कर्म करने के लिए अवतरित हुए हैं और रात को कर्म करके शान्तिधाम में चले जाओ तो अवतरित होकर अवतार बन करके आओ। अवतार अवतरित होते ही हैं श्रेष्ठ कर्म करने के लिए। ऊपर की स्थिति से नींचे आना — इसको कहते हैं अवतरण।

27. अमृतवेले बाप द्वारा जो श्रीमत मिली हुई है उसे स्मृति में लाओ तो उसे पालन करने में समर्थी आयेगी। जैसे पढ़ाई पढ़ने वाले पढ़ाई को स्मृति में रखने के लिए इसी टाइम पढ़ने की कोशिश करते हैं क्योंकि इसी समय सहज स्मृति रहती है। तो अमृतवेले की मदद से सहज ही स्मृति को समर्थवान बना सकते हो। श्रीमत प्रमाण समय को पहचान, समय के अनुकूल कर्त्तव्य करने से सहज ही सर्व प्राप्तियाँ कर सकते हो। मेहनत से छूटने के लिए अमृतवेले की वैल्यू को जानकर चलो।

28. अमृतवेले सिर्फ एक संकल्प करो कि जो भी हूँ, जैसी भी हूँ, आपकी हूँ। माया की बाजी को पारकर साथ आकर बैठ जाओ, संकल्प और बुद्धि बाप के हवाले कर दो। अमृतवेला हुआ, आँख खुली और सेकेण्ड में जम्प लगाकर बाप के साथ बैठ जाओ। तो सहज बाप के सर्व खजाने सो आपके खजाने अनुभव होंगे। अधिकार के तख्त पर बैठने के कारण अधिकारीपन का अनुभव होगा। बाप खुदा दोस्त के रूप में यह अधिकार का तख्त ऑफर करते हैं। उठो और तख्त पर बैठ जाओ। थोड़े समय के अधिकार के तख्त निवासी होने से भी जो चाहो वह तकदीर बना सकते हो। इस गोल्डन समय

Scanned by CamScanner

पर बेहद तख्तनशीन बनने से सहज ही अपनी गोल्डन स्थिति बना सकते हो। और भविष्य गोल्डन दुनिया में श्रेष्ठ पद प्राप्त कर सकते हो।

29. अमृतवेले सिर्फ नियम प्रमाण नहीं बैठो, लेकिन शक्तिशाली स्टेज में बैठो और चेक करो – कि शक्तिशाली स्टेज के बीच में माया तो नहीं आती है। कई बार अमृतवेले के महत्व को न जानने के कारण कोई-कोई नींद की अवस्था को भी शान्ति की अवस्था समझते हैं। वरदानों के समय अगर कोई सोया रहे, सुस्ती में रहें वा विस्मृत रहे, कमजोर होकर बैठे तो वरदानों से वंचित हो जायेंगे।

30. अमृतवेले पावर हाउस से फुल पावर लेने का जो नियम है, उसको बार-बार चेक करो। अमृतवेले बाप से कनेक्शन जोड़ लिया तो सारा दिन माया की बेहोशी से बचे रहेंगे। कनेक्शन ठीक रखना है, ऐसे नहीं सिर्फ उठकर बैठ जाना है। उठकर बैठ तो गये, यह तो नियम है। लेकिन चेक करो–कनेक्शन ठीक है अर्थात् प्राप्तियों का अनुभव होता है। अगर इन्जेक्शन लगायें लेकिन शक्ति का अनुभव न हो तो समझेंगे की इन्जेक्शन ने पूरा काम नहीं किया। इसी प्रकार अमृतवेले का कनेक्शन अर्थात् सर्व पावर्स का और सर्व प्राप्तियों का अनुभव होना, यह बड़े से बड़ा इन्जेक्शन है। तो पहले यह चेक करो कि अमृतवेले का आदिकाल ठीक है। आदिकाल में अनुभव करने का अभ्यास नहीं है तो सृष्टि के आदि अथवा आदिकाल में सर्व सुखों का अनुभव नहीं कर सकेंगे। जैसे सारे दिन का यह आदिकाल है, उस आदिकाल को अगर छोड़ कुछ समय के बाद वा कुछ घंटों के बाद जागते वा बैठते वा कनेक्शन जोड़ते हो तो जितना यहाँ लेट उतना वहाँ लेट। क्योंकि बापदादा से बच्चों के मिलन का, अपाइन्टमेंट का समय जो है उसमें पहला चांस बच्चों का है, फिर भक्तों का है। अगर भक्तों के टाइम में कनेक्शन जोड़ा तो बच्चों जैसा वरदान नहीं पा सकेंगे।

अमृतवेले भिन्न-भिन्न रूप से माया के वार तथा उनसे पार होने की विधि

1. मैजारिटी बच्चे अमृतवेले जब याद में बैठते हैं तो कोई उल्हनें देते,

Scanned by CamScanner

कोई शिकायत करते या दिलशिकस्त स्वरूप होकर बैठते हैं, वरदानी विश्व-कल्याणी स्वरूप के बजाए स्वयं के प्रति वरदान मांगने वाले बन जाते हैं या अपनी शिकायतें करते या दूसरों की। तो जैसा समय वैसा स्मृति स्वरूप न होने से समर्थी स्वरूप भी नहीं बन पाते। इसलिए जैसा समय वैसा स्मृति स्वरूप होकर बैठो।

2. अमृतवेले की रूह-रूहान बहुत रमणिक होती है, उस समय विशेष दो रूप होते हैं, एक अधिकारी रूप से मिलते और बातचीत करते हैं, दूसरे उल्हनों के और तड़पती हुई आत्माओं के रूप से बात करते हैं। कई बच्चे अमृतवेले बाप के आगे वकील के रूप में जाते हैं। बाप की दी हुई पाइंट्स बाप के आगे वकील रूप में रखते हैं। लेकिन सतयुग में यह वकालत नहीं होगी। इसलिए बाबा के आगे ऐसा नटखटपन नहीं करना। वकील की बजाए जज बनो। लेकिन स्वयं का जज बनो दूसरों का नहीं।

3. बापदादा अमृतवेले बच्चों के विचित्र खेल देख हर्षित होते हैं। उस समय हरेक की फोटो निकालने योग्य पोज व पोजीशन होती हैं। साक्षी होकर आप भी देखो तो बहुत हंसी आयेगी। कोई योद्धा बनकर आते हैं। बाप के दिये हुए शस्त्र बाप के आगे यूज़ करते हैं। आपने ऐसा कहा है, ज्ञान ऐसा कहता है। लेकिन बाप मुस्कराते खेल देखते रहते हैं और कहते—बच्चे, योद्धा के बजाय विजयी बनो।

4. जैसा अमृतवेला प्रारम्भ होता है तो चारों ओर सभी बच्चे पहले नम्बर मिलाने का पुरुषार्थ करते हैं या फिर कनेक्शन जोड़ने का पुरुषार्थ करते हैं। कोई का नम्बर, लाइन क्लीयर होने कारण जल्दी मिल जाता है और कोई नम्बर मिलाने में ही समय बिता देते हैं। कोई-कोई नंबर न मिलने के कारण दिलशिकस्त हो जाते हैं। कोई-कोई नम्बर मिलाते बाप से हैं लेकिन बीच-बीच में कनेक्शन माया से जुट जाता है। माया ऐसा इन्टरफियर करती है जो वह चाहते भी कनेक्शन जोड़ नहीं सकते। ऐसा क्यों होता? क्योंकि वे सारा दिन अलबेले और आलस्य के वश होते हैं। अलबेली आत्माओं को माया भी विशेष वरदान के समय बाप की आज्ञा पर न चलने का बदला लेती है।

5. ऐसी अलबेली आत्माओं के दृश्य बहुत आश्चर्यजनक होते हैं। थोड़े

Scanned by CamScanner

से समय के बीच उनके अनेक स्वरूप दिखाई देते हैं, कभी बाप को स्नेह से सहयोग लेने की अर्जी डालते, कभी बाप को खुश करने के लिए बाप को ही बाप की महिमा और कर्त्तव्य की याद दिलाते। कभी जोश में आकर माया से परेशान होकर सर्वशक्तियाँ रूपी शस्त्र यूज़ करते, कभी तलवार चलाते तो कभी ढाल को सामने रखते लेकिन जोश के साथ आज्ञाकारी वफादार, निरंतर स्मृति स्वरूप बनने का होश चाहिए तब यथार्थ निशाने पर पहुँच सकेंगे। कोई-कोई फिर ऐसे भोले बच्चे भी होते जो ईश्वरीय प्राप्ति और माया की प्राप्ति के अन्तर को भी नहीं जानते। निंद्रा को ही शान्त स्वरूप और बीजरूप स्टेज समझ लेते हैं। अल्पकाल की निंद्रा द्वारा रेस्ट के प्राप्त सुख को अतीन्द्रिय सुख समझ लेते हैं। ऐसे अनेक प्रकार के बच्चे अनेक प्रकार के दृश्य दिखाते हैं। अमृतवेले ड्रामानुसार उन बच्चों को बाप से मिलने का विशेष अधिकार प्राप्त होता है जो वाइसलेस हैं। क्योंकि वाइसलेस आत्मायें ही वायरलेस का कनेक्शन जोड़ सकती हैं। वे संकल्प करते ही मिलन मना लेते हैं।

6. अमृतवेले याद में बैठ तो सब जाते हैं लेकिन उस समय की सीन देखो तो बड़ा मजा आता है। उस समय का दृश्य ऐसा होता है। जैसे कि जयपुर में एक हठयोगियों का म्यूजियम, भिन्न-भिन्न प्रकार के हठयोग दिखाये हुए हैं। तो अमृतवेले की सीन भी ऐसी होती है – कोई हठ से नींद को कन्ट्रोल करते तो कोई मजबूरी से टाइम पास करते और उल्टे लटके हुए होते हैं अर्थात् जिस कार्य के लिए बैठते हैं वह उनसे नहीं होता। जैसे उन हठयोगियों को दिखाते हैं कि कोई एक टांग पर, कोइ उल्टे और कोई कैसे होते हैं। यहाँ भी उस समय का दृश्य ऐसा होता है। कोई एक सेकेण्ड अच्छा व्यतीत करते, फिर दूसरे सेकेण्ड देखो तो एक टांग पर ठहरते तो दूसरी टांग गिर जाती। सोचते हैं आज के दिन कुछ जमा करेंगे लेकिन होता नहीं है। यह सीन देखने की होती है, कोई फिर सोते-सोते भी योग करते हैं। जैसे वह हठ करते हैं, काँटों पर सोते हैं। यहाँ फिर शेष शैया पर होते हैं। यहाँ का उस समय का पोज वण्डरफुल होता है।

7. अमृतवेले बापदादा बच्चों की ड्रिल देखते हैं – ड्रिल करने के लिए

Scanned by CamScanner

समय की सीटी पर पहुँचने वाले नम्बरवार होते हैं। तीन प्रकार के बच्चे अमृतवेले की ड्रिल में होते हैं: (1) समय बिताने वाले, (2) संयम निभाने वाले, (3) स्नेह निभाने वाले। हरेक का पोज अपना-अपना होता है। कई बच्चे बापदादा को बहानेबाजी की कलायें बहुत दिखाते हैं। कई ऊपर जाने के बदले बार-बार नीचे आ जाते हैं। बीजरूप स्टेज का अनुभव करने के बदले विस्तार रूपी वृक्ष में अथवा अनेक संकल्पों के वृक्ष में उलझ जाते हैं। यह है मोटी बुद्धि वालों का पोज। संयम निभाने वाली आत्मायें बाप के आगे गुणगान करने के बजाय बाप द्वारा सर्वशक्तियों की प्राप्ति करने के बजाय, निंद्रा के नशे की प्राप्ति में ज्यादा रहती हैं। सेमी नशा भी होता है। साथ-साथ समय की समाप्ति का इंतजार होता है। इसका मूल कारण है – आत्मा का भारीपन अर्थात् मोटापन। इस मोटेपन को मिटाने के लिए बार-बार अशरीरीपन की एक्सरसाइज करो और बुद्धि का भोजन संकल्प है, उसकी परहेज रखो। व्यर्थ संकल्प रूपी एक्सट्रा भोजन स्वीकार न करो। इस परहेज के लिए सेल्फ कन्ट्रोल (स्वयं पर नियंत्रण) चाहिए।

8. माया बड़ी चतुर है, वह विशेष अमृतवेले बाप से किनारा कराने के लिए आ जाती है। विशेष बहानेबाजी के खेल में रिझा लेती है। जैसे बाजीगर अपनी बाजी में लोगों को आकर्षित कर लेते हैं ऐसे माया भी अनेक प्रकार के अलबेलेपन, आलस्य और व्यर्थ संकल्पों की बहानेबाजी में रिझा लेती है। इसलिए गोल्डन चांस को कई बच्चे गंवा देते हैं। और गोल्डन समय को गंवाने के कारण सहज प्राप्ति से वंचित हो जाते हैं। फाउन्डेशन कमजोर हो जाता है। इसलिए माया की चतुराई को समझो। माया की यह बाजी साइडसीन है उसमें रुको नहीं। मन बुद्धि बाप के हवाले कर बाप के पास बैठ जाओ।

Scanned by CamScanner